REVIEW OF RESEARCH

कन्या भ्रूण हत्या एवं महिला सशक्तिकरण– एक सामाजिक अध्ययन

डॉ. अमिताप शर्मा

वणिज्य विभाग , शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी, (म.प्र.)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

शोध सारांश:

सृष्टि के आरम्भिक काल से ही समाज के विकास में पुरुष के समान ही महिलाओं का भी विषेशमहत्व रहा है। महिला सृजन और निर्माण शक्ति की विभुति है। वह समाज और संस्कृति की जन्मदात्री तथा पोषककत्री है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओ के योगदान को स्वीकार किया गया है, क्योकि महिला एवं पुरुष विकास रूपी गाड़ी के दो पहिए है।राष्ट्र के विकास में महिलाओं का उतना ही महत्व है, जितना कि पुरूषो का। महिलाओ के विकास के बिना राष्ट्र के विकास की बात करना एक केारी कल्पना प्रतीत होता है।आज लिंग परीक्षण, भ्रूण हत्या और बालिका शिक्षा की समस्या केवल महिला ही नहीं वरन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की समस्या बन गयी है। वर्तमान समय में ऐसे कई क्षेत्र है जहाँ बालिकाओं के जन्म को अभिशाप माना जाता है। भारत मे स्वतन्त्रता के बाद से महिला कल्याण के लिए एवं ९० के दशक के बाद से महिला सशक्तिकरण हेतु सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर निरन्तर प्रयास किए जाते रहे है। ग्रामीण महिलाओ की शिक्षा, स्वास्थ्य स्थिति, आर्थिक सहभागिता, निर्णय क्षमता आदि के सन्दर्भ में पुरूषो की तुलना में कमजोर स्थिति को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्रो में महिला सशक्तिकरण जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे है। सशक्तिकरण का पहला आयाम महिलाओ में आत्मविश्वास और स्वाभिमान को जागृत करना है। पुरुष और महिला की सामाजिक स्थिति में अंतर यांतो समूचे समाज में मौजूद है, किन्तु ग्रामीण समाज में महिलाओ की दशा अत्यन्त दयनीय है। शहरों में तो शिक्षा, समाज सुधार आंदोलन और प्रचार प्रसार के माध्यम से महिलाओ में अपने अधिकारो के प्रति समानता एवं स्वतत्रंता का भाव जागृत हुआ है, परन्तु ग्रामीण समाज में औरतें पारिवारिक व सामाजिक शोषण की शिकार हो रही हैं। वर्तमान समय में ऐसे कई क्षेत्र है जहाँ बालिकाओ के जन्म को अभिशाप माना जाता है।चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र मे नित नये प्रयोगों और अनुसंधानो के माध्यम से जहां एक और असाध्य समझी जाने वाली अनेक बीमारियों से लाखों करोडों लोगो की मुक्ति के द्वार खोले गये है वही दूसरी ओर कुंठित प्रवृत्ति के लोगों के बीच प्रकृति के विरूद्ध घिनौनी छेडछाड करने की होड लगी हुई है। इन्ही मे से एक प्रयोग बालिका भ्रूण हत्या का है जिससे अल्ट्रा सोनोग्रॉफी, एम्निओसेटेसिस तथा अन्य तकनीको के जरिए गर्भस्थ शिशु के लिंग का पता करके बालिका भ्रूण पाये जाने पर गर्भपात के जरिए उसकी हत्या किये जाने का गैर कानूनी सिलसिला बडी तेजी से पूरे देश में फैल रहा है। देश में जनवरी १९९६ से प्रसवपूर्व परीक्षण तकनीकि अधिनियम के अंतर्गत गर्भस्थ शिशु के लिंग निर्धारण पर पावंदी है। लेकिन इसी समुचित क्रियांन्वयन सभव नही हो पाया है।

मुख्य शब्द:– महिला सशक्तिकरण, सामाजिक स्वास्थ्य, सामाजिक शोषण, भ्रुण परीक्षण व हत्या, बालिका शिक्षा।

प्रस्तावना:–

भारतीय नारी की प्रकृति सृजनशील एवं रचनात्मक शक्ति की प्रतीक है। वह समाज और संस्कृति की जन्मदात्री व पोषककर्ती है। संसार में यदिनारी न होती तो सभ्यता और संस्कृति भी न होती। नारी के सहयोग, विद्रोह, शौर्य–साहस से लड़ाईयाँ और बलिदानों की गाथाएँ प्रागैतिहासिक काल से लकेर आधुनिक काल तक ऐतिहासिक ग्रंथों धार्मिक महाकाव्यों यथा रामायण, महाभारत आदि, वेदो, उपनिषदों से लकेर पुराणों तक फैली है। किसी भी राष्ट्र का

उत्थान नारी शक्ति के बिना सम्भव नहीं। उसके सम्बन्ध में तो यहाँ तक कहा गया है कि **"जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते है।"**

सम्पूर्ण विश्व में आज महिला सशक्तिकरण हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। इस विषय पर विभिन्न सेमीनार एवं कार्यशालायें आयोजित की जा रही है और कुछ ऐसा माहौल बनाया जा रहा है जैसे दुनिया भर के संसाधन आज महिला सशक्तिकरण को ही समर्पित है। इस स्थिति में यह भ्रम हो सकता है। कि आज महिलाओं की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हो गया है, लेकिन यह तस्वीर का एक पहलू हैं। जो वास्तविकता से बहुत दूर है।

महिला सशक्तिकरण की मीमांसा करने के पहले उन प्रतिमानों का निर्धारण आवश्यक है जिनके आधार पर सशक्तिकरण को आँका जा सके। शिक्षा, लिगांनुपात, सामाजिक सुरक्षा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाऐं और काम करने की आजादी को संयुक्त राष्ट्र संघ विकास का पैमाना मानता है। परंतु वर्तमान के मानव विकास सूचकांक को विकास का पैमाना माना जाता है। जिसकों निर्धारित करने में प्रति व्यक्ति आय, जीवन स्तर ओर पर्यावरणीय दशाओं को भी महत्व दिया जाता है। मानव विकास सूचकांक समाज में महिलाओं की स्थिति को प्रतिबिम्बित करता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की नवीनतम रिपोर्ट में १७५ देशों के बीच मानव विकास के मामले में भारत को १२७वॉ स्थान मिला है। जो हमारे विकास संबधी सभी दावों को झुठला देता है।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य:–

समाज में बढता हुआ लिंगानुपात एवं महिला अपराध एक गंभीर समस्या का रूप धारण का चुका है। आजजहां एक ओर सरकार द्वारा महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार के दावे किए जाते हैं, वही कई निजी संस्थाओं द्वारा भी इस बात की पुष्टि समय–समय पर किये जाते रहे हैं। वहीं दूसरी ओर महिलाओं के हिंसा व उत्पीड़न तथा भ्रुण हत्या के कारण समय–समय पर समाचार पत्रों एवं कई निजी संस्थाओं द्वारा अपने रिपोर्ट में महिलाओं के गिरतेसामाजिक स्तर की भी खबरें आती रही है। आज महिलाओं की वास्तविक सामाजिक स्थिति को जानना और उनके सशक्तिकरण हेतु किए जा रहे प्रयास के प्रभावों को जानना समय की मांग बन गयी है।

अध्ययन पद्धति–

प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतुप्राथमिक तथ्यों के संकलन के आधार पर किया गया है। द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए विभिन्न पुस्तकों एवं समाचार पत्र–पत्रिकाओं की सहायता ली गयी है।

तथ्यों का विश्लेषण:–

शिक्षा विशेष रुप में उच्च शिक्षा आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रकार का बीमा है जिसका प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष संबंध महिलाओ की स्वतत्रं ता सामाजिक स्तर को सुदृढ़ करने से होता है। जिसके माध्यम से जागरूकता, कार्यशीलता, वृहत्तर नियंत्रण के लिए प्रयास द्वारा महिलाएं अपने विषय में निर्णय लेने के लिए समर्थ एवं स्वतत्रं होती है। दूसरे शब्दों में सशक्तिकरण एक अनुभूति है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति को मानसिक ऊर्जा मिलती है। जिससे महिलाएं अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होती है। शिक्षा और जागरूकता के फलस्वरूप महिलायें अपने अधिकारों का बोधात्मक उपयोग कर सकती है अतंरराष्ट्रीय विकास की धारा में भागीदार बनने के लिए शिक्षित एवं जागरूक होना मील का पत्थर' साबित हो सकता है।स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्रियों की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है पर अभी वे बलात्कार, दहेज, दहेज– हत्या पारिवारिक हिंसा और उत्पीड़न की शिकार है। अभी भी वे स्वालंबी नहीं बन पाई है और न पूरी तरह से शिक्षित। इसी वर्ग से स्त्री– विमर्श, नारीवाद और महिला सशक्तिकरण की आवाज भी बुलंद की गई है।'नोबल पुरस्कार' से सम्मानित अमर्त्य सेन का मत है कि ''कन्या भ्रुण और कन्या हत्या, कन्याओं के कुपोषण, एक अपराध जो भारत में चुपचाप स्वीकृत पाता जा रहा है। कन्या भ्रुण हत्या न सिर्फ सामाजिक सम्मान बल्कि सरकार की जनसंख्या नीति से भी प्रभावित होती है। जिसमें "हम दो हमारे दो" का नारा भी अहम भूमिका निभाता है।'' अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या अध्ययन संस्थान के रवि वर्मा का कहना है कि भारतीय परिवार जो सरकारी प्रचार प्रसार के कारण छोटा होता जा रहा है, पुत्रों की तुलना में कन्याओं के बलिदान को बढ़ावा देता है।"बदलते समय के साथ कन्या भ्रुण हत्या के स्वरूप में बदलाव आया है। आज नगर और महानगर की शिक्षित महिलाएं जो कि महिला सशक्तिकरण का नारा लगा रही है, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं, सड़कों पर जुलूस निकाल रही है यह सब नारीवाद के तहत हो रहा है। कितनी विचित्र बात है कि यह भी कन्या भ्रुण हत्या मे शामिल हौ। इन्हें भी पुत्र चाहिए क्योकि इनका कहना है कि जब संतान

चाहिए तो लड़का ही होना चाहिए। यही कन्या भ्रुण हत्या काफलसफा परिवार के अंदर ही चकनाचूर हो जाता है। एक सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि देश में एक करोड़ कन्याएं जन्म लेती है और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन का यह मानना है कि देश में प्रतिवर्ष पचास लाख कन्या भ्रुण नष्ट किये जाते है। इसी कारण से स्त्रीपुरुष के अनुपात मे निरंतर कमी आती जा रही है।भारतीय जनगणना विधि द्वारा प्राप्त जनगणना वर्ष १९०१ से २०११ तक के ऑकड़ें इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को असमानता एवं शोषण का शिकार होना पड रहा है। भाारतीय महिलायें पुरूषों के मुकाबले विकास की दौड में काफी पीछे है। २००१ की जनगणना के आंकडे बताते है। कि भारत में लगभग आधी महिला जनसंख्या पूर्णतया निरक्षर है। ओर विगत दशक (१९९१–२००१) में महिला निरक्षरता अपेक्षाकृत बढी है। समान काम के बदले समान बेतन प्राप्त करना हमारा मौलिक अधिकार है। लेकिन भारत सरकार की आर्थिक समीक्षा २००४ बताती है कि इस मामले में बेहद विसंगति है कार्यस्थल पर महिला का शारीरिक उत्पीडन, महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों का बढता ग्राफ महिलाओं द्वारा की जा रही आत्महत्यायें, महिला सशक्तिकरण की निरर्थकता स्पष्ट कर देती है महिलायें न तो किसी दूर दराज के परम्परागत गांव में सुरक्षित हैं न ही देश की राजधानी के राजपथ पर।

आज हम प्रतिवर्ष हजारों शिशुओ की गर्भ में ही सिर्फ इसीलिये हत्या कर देते है कि गर्भ में पल रहा वो जीवन एक कन्या का है। इन घृणित हत्याओं के कारण देशभर में लिंगानुपात बेहद कम है। विश्व के अधिकतर विकसित देशों में लिंगानुपात लगभग बराबर है। कही–कही पुरूषों के मुकाबले यह अधिक भी है। लिंगानुपात समाज में महिलाओं की स्थिति का प्रतीक है। कम लिंगानुपात यानी कम विकसित राष्ट्र।

लिंगानुपात के मामले में हमारे यहां एक और विसंगति है। यदि गरीब एवं पिछडे राज्यों में लिंगानुपात कम हो तो बात तर्कसंगत है। लेकिन भारत में लिंगानुपात उन राज्यों में कम है। जो आर्थिक दृष्टि से भारत के विकसित राज्यों में गिने जाते है। पंजाब और हरियाणा जैसे अति विकसित राज्यों में न्यूनतम लिंगानुपात बताता है। कि भारत में यह सिर्फ आार्थिक समस्या ही नही है अपितु इसके पीछे कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण भी है। जो समाज अपनी बेटियों को पैदा ही नही होने देता उसे हम विकसित समाज नही कह सकते।

निम्न आंकडों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि सन १९०१ के बाद से भारत में लिंगानुपात लगातार कम हुआ है–

तालिका–१ भारत में लिंगानुपात अनुपात

वर्ष	प्रति १००० पुरूषों पर महिलाओं की संख्या
१९०१	९७२
१९११	९६४
१९२१	९५५
१९३१	९५०
१९४१	९४५
१९५१	९४६
१९६१	९४१
१९७१	९३०
१९८१	९३३
१९९१	९२७
२००१	९३३
२०११	९४०

स्त्रोतः– इंडिया डेवलेपमेंट रिपोर्ट २०११–१२

समूचे विश्व के साथ आज हमारे देश में भी मातृ शक्ति को कमजोर किया जा रहा है। यदि कन्याओं को जन्म देने से पहले ही मार दिया जाता रहा और काल की पगध्वनि को अनसुना किया जाता रहा। तो एक दिन ऐसा भी आयेगा कि हमारे देश से स्त्री प्रजाति लुप्त हो जाये। जिस अनुपात और जिस तीव्र गति से हमारे देश में कन्याओं की जन्म दर घट रही है वह अत्यन्त अशुभ संकेत है स्त्री नही होगी तो पुरूष भी नही होगा। जननी को जन्म ही नही लेने दिया जायेगा तो जगत का सृजन कौन और कैसे करेगा।

जन्म के बाद कन्या को मार देने की प्रवृत्ति भारत के जिन इलाकों में पनपी उन क्षेत्रों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखने पर ज्ञात होता है कि कभी यहॉ कन्याओ को लूटने वाली बबर्रता का दबदबा था। वहॉ कन्याओं को लूटने वाले परिवार के अन्य सदस्यों की हत्या कर देते थे जिसका परिणाम यह हुआ कि कन्या के जन्म को वहॉ अभिशाप समझा जाने लगा। स्त्रियों की सुन्दरता को मृत्यु का आमंत्रण माना और समझा जाने लगा। ठीक यही कहानी आज फिर दुहरायी जा रही है। दहेज आादि सामाजिक कुरीतियों के चलते कन्या जन्म को अभिशाप समझा जाने लगा है इसीलिये जन्म लेने से पूर्व ही, मॉ की कोख में ही उसकी हत्या कर दी जाती है। लेकिन कन्या भ्रूण की हत्या करने वाले यह नही जानते है। कि वे कोख में सांस ले रहे एक अबोध की हत्या के साथ–साथ आत्महत्या भी कर रहे है। कन्या भ्रूण की हत्या करने वाले मॉ–बाप एवं परिजनों को समझ लेना चाहिए कि यदि नारायणी को मारेगे तो नारायण को कोपभाजन भी उन्ही को बनना पडेगा। वे इस सत्य को अनदेखा कर रहे है कि यदि वे लक्ष्मी के साथ छेडछाड करेगे तो अंतत: उनके हाथ कंगाली ही लगेगी।

समाज में बढ़ती भ्रूण परीक्षण एवं हत्या के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचारों का विश्लेषण क्रमश: तालिका संख्या २ तथा ३ मे ं किया जा रहा है।

तालिका संख्या ०२–क्या महिलाओ को भ्रूण परीक्षण करवाना चाहिए

क्रम संख्या	भ्रूण परीक्षण करवाना	आवृति	प्रतिशत
०१	उचित	०२	०४
०२	अनुचित	४५	९०
०३	कोई उत्तर नहीं	०३	०६
	योग	५०	१००

तालिका संख्या ०२ से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि महज ०४ प्रतिशत महिलायें ही महिलाओं के भ्रूण परीक्षण को उचित बताते हैं जबकि ०६ प्रतिशत इस संदर्भ में अपने विचार प्रकट करने से इंकार करती हैं। सर्वाधिक ९० प्रतिशत महिलायें इस कार्य को अनुचित मानती है।

तालिका संख्या ०३–महिलाओं के गर्भपात करवाने के प्रति मनोवृति

क्रम संख्या	मनोवृति	आवृति	प्रतिशत
०१	उचित	०४	०८
०२	अनुचित	४४	८८
०३	कोई उत्तर नहीं	०२	०४
	योग	५०	१००

महिलाओं के गर्भपात करवाने के प्रति मनोवृति के संदर्भ में तालिका संख्या ०३ से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ०८प्रतिशत महिलायें इस कार्य को उचित मानती हैं, ८८ प्रतिशत उत्तरदाता इसे अनुचित मानती हैं जबकि ०४ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में अपने कोई भी विचार व्यक्त नहीं किये।

हम यह कह सकते है कि समाज में महिला व पुरुष कितने भी शिक्षित क्यों न हो जाये परन्तु कुछ लोगों की मनोवृत्ति आज भी रूढिवादी है। जिससे वे बालक व बालिकाओं में भेद करने से परे नहीं है। ८ प्रतिशत उत्तरदाता आज भी ऐसे है जो बालिकाओं के शिक्षित होने के पक्ष में नहीं है जिनमें से ७५ प्रतिशत खराब माहौल होने का कारण व २५ प्रतिशत घर का असंतुलित वातावरण का कारण बताती है। २१ वीं सदी में बालक और बालिकाओं में इतना भेद है कि ४ प्रतिशत उत्तरदाता लिंग परीक्षण को भी उचित बताती है वहीं ६ प्रतिशत उत्तरदाता इस कसमकस में है कि वे लिंग परीक्षण को उचित को अनुचित। हमारा देश पुरुष प्रधान होने के कारण बालकों के जन्म को ज्यादा महत्व दिया जाता है वहीं लिंग परीक्षण में बालिका ज्ञात होने पर उनका गर्भपात करा दिया जाता है। इन्ही निष्कर्षो के आधार पर कुछ निम्न सुझाव दिये गये है–

सुझाव–

यह एक गंभीर और ज्वलंत प्रश्न है कि हम कन्या भ्रुण हत्या पर किस प्रकार से अंकुश लगाएं कियह जघन्य अपराध न परिवार कर सके और न ही एकडॉक्टर। यद्यपि इसकी रोकथाम के लिए सरकार ने कानून बना दिए है। इस देश का दुर्भाग्य यह है कि कानून बनते रहते है जितने अपराध नहीं उससे कहां अधिक अपराध की धाराएं है जो कानून को सही अर्थो में काम करने से रोकती है। इसी की वकील खाता है कानून बनते है पर क्या ये लागू किए जाते है? देश को अच्छा बनाने, नैतिकपूर्ण बनाने, राष्ट्रभक्त बनाने, भ्रष्ट व्यवस्था को खत्म करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जनता की सक्रिय भागीदारी कन्या भ्रुण हत्या को रोकने में होनी चाहिए।

१. परिवार के लोगो को लड़के और लड़की केमहत्व को समझाना चाहिए। एक सजगपरिवार एक सजग समाज को गढ़ता है।
२. शिक्षित संभ्रातं और प्रभावशाली व्यक्तियों कीसमिति बनाना चाहिए जो अल्ट्रासाउण्ड के केंद्रों का निरीक्षण करके रिपोर्ट सरकार को भेजे।
३. परम्परागत पुत्र की मानसिकता को दूर करनाचाहिए जिससे पुत्र और पुत्री की अवधारणा मेंकमी आ सके।
४. कन्या भ्रुण हत्या के विरूद्ध जनता का दबावहोना चाहिए। वे लोग जो इसमें लिप्त पाए जाए उनका सामाजिक रूप से बहिष्कार किया जाना चाहिए। ठीक इसी प्रकार से ऐसे परिवारों को चिन्हित किया जाए तथा इन्हें भी सामाजिक बहिष्कार का दंड दिया जानाचाहिए।
५. वे परिवार जहां लड़कियां अधिक है और निर्धन भी है, ऐसे परिवारों को सरकार आर्थिकसहायता प्रदान मिलनी चाहिए जिससे वे शिक्षित होकर स्वाबलंबी बने।
६. दहेज के विरूद्ध आंदोलन चलाना चाहिए । वे लोग जो दहेज मांगते है और लते है। उन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए। क्योकि दहेजका आतकं भी हत्या को प्रोत्साहित करता हैं।
७. मीडिया का दायित्व है कि वह कन्या भ्रुणहत्या के विरूद्ध आवाज बुलंद करे। जो इसमें लिप्त है उनका पर्दाफाश करे। लड़कियों केमहत्व को निरंतर उजागर करे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

१. फोर्थ एम्पायर, फरवरी , २०१७, पृ० ९
२. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर, २०१८
३. डॉ विप्लव (२०१३). महिला सशक्तिकरण: विविध आयाम — राहुल पब्लिशिंग हाउस
४. पांडे चंद्रकला. दहेज प्रथा के बदलते आयाम, अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति, शाखा कानपुर पृ. १७
५. सिंह, मिनाक्षी निशांत (२००९). महिला सशक्तिकरण का सच, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
६. सिंह,वी०एन०. सिंह, जनमेजय (२०१०). आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन्सभारत, २०११
७. प्रतियोगता दर्पण — जून २०१८, अक्टूबर २०१८
८. गृहशोभा — मई जून २०१७
९. मनोरमा ईयर बुक — २०१७
१०. नवभारत टाइम्स, रोजगार समाचार एवं रोजगार निर्माण आदि।

डॉ. अमिताप शर्मा
वणिज्य विभाग , शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी, (म.प्र.)